बौद्ध संघ: विशेषताएँ

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

बौद्ध संघ: विशेषताएँ

गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म में विश्वास करने वाले सक्रीय अनुयायियों वाले बौद्ध संघ की स्थापना की| इनकी विशेषताएँ इस प्रकार है:

1. बौद्ध संघ में प्रवेश करने के लिए जाति एवं लिंगभेद नहीं था. किसी भी वर्ण, जाति, स्त्री या पुरुष का संघ में प्रवेश हो सकता था.
2. संघ के भीतर सभी सदस्य समान माने गये. केवल व्यवस्था चलाने के लिए अध्यक्ष का चुनाव होता था.
3. स्त्रियों एवं पुरुषों के लिए अलग-अलग संघ था.
4. संघ में प्रवेश से अनेक व्यक्तियों को रोका गया. जैसे कर्जदार, रोगी, अपराधी, दास, सैनिक आदि.
5. आंतरिक संचालन प्रजातान्त्रिक तरीके से होता था जिसके तहत वैचारिक मुद्दों पर बहस के बाद बहुमत को महत्व दिया गया.
6. सामान्यतः प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी.

नियम एवं प्रक्रियाएं

बौद्ध संघ के नियम तथा प्रक्रियाएं अनेक थे, जिनका पालन करना पड़ता था| इनमें कुछ महत्वपूर्ण नियम निम्न है.

1. प्रवज्या - यह एक सामान्य प्रशिक्षण था जो 15 वर्ष की आयु में प्रवेश के समय होता था.
2. उपसंपदा - 20वर्ष की आयु में पूर्ण दीक्षा. यहां से वास्तविक भिक्षु (आचार्य) जीवन की शुरुआत होती थी.
3. कंथीन - यह एक वस्त्र समारोह था जिसमें बौद्ध भिक्षु कसाय (गेरुआ) वस्त्र धारण करते थे.
4. उपोसठपाठ - यह संघ में भिक्षुओं द्वारा अपराधो को स्वीकृत करने का एक विधान था. इसके तहत भिक्षु हर पखवाड़े इकठ्ठा होकर स्वीकारोक्ति करते थे.
5. पातीमोख - यह भिक्षुओं के आचरण संबंधी नियम से संबंधित था. ऐसे 227 निर्देशों के बारे में पता चलता है.

बौद्ध संघ के प्रति बुद्ध का व्यावहारिक दृष्टिकोण

- बुद्ध एक मध्यममार्गी थे. अतः उन्होंने संघ के बारे में मध्यम नीति अपनाई. इसकी झलक निम्न बिन्दुओं के माध्यम से देखी जा सकती है.

- बुद्ध ने संघ में उपान (जूता-चप्पल) पहनने की इजाजत दी.
- सामान्य नियम था की मांस नहीं खाना है लेकिन जब दूसरी चीजें उपलब्ध न हो तो जान बचाने के लिए इसे लिया जा सकता है.
- संघ के बाहर भिक्षु दक्षिणा स्वीकार कर सकते थे लेकिन अपनी पसंद की चीजें नहीं मांग सकते थे.
- संघ में मादक एवं सुगन्धित द्रव्य, आभुषण आदि के प्रयोग पर रोक थी.

इन बिन्दुओं से स्पष्ट है की संघ के प्रति बुद्ध ने व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया.